अष्टादशमहापुराणग्रंथाः ।

नाम.	की. रु. आ.
पद्मपुराण–संपूर्ण ५५००० ग्रंथ छः खण्डोंमें शुद्धतापूर्वक, कईएक व्रतादिमाहात्म्य, तीर्थमाहात्म्य, शिवविष्णु महिमा, रुद्राक्ष तुलसी माहात्म्यादि सृष्टिखण्ड, भूमिखण्ड, स्वर्गखण्ड, ब्रह्मखण्ड, पातालखंड उत्तरखंड क्रियायोगखण्डमें सांगोपांग वर्णनहै यह ग्रन्थ वैष्णवोंके अत्यन्त उपयोगी है	१५–०
नारदपुराण–संपूर्ण इस ग्रंथमें पुराण वर्णन आश्रमादि धर्म गंगामाहात्म्य धर्माख्यान धर्मकथन धर्मशास्त्र निर्देश वामनावतार वर्णन बृहदुपाख्यान कृष्णमंत्र वर्णन अष्टादशपुराणसार पुराण महिमादि २४००० मूलमात्र है	७–०
विष्णुपुराण–विष्णुचित्ती तथा श्रीधरी दो टीकासमेत	४–०

नाम.	की. रु. आ.
श्रीमद्भागवत–श्रीधरीटीका और टिप्पणीसह, ग्लेज कागज	१०–०
शिवमहापुराण–बडा–२४००० मूलमात्र–इसमें विद्येश्वरसंहिता, रुद्रसंहिता, शतरुद्रसंहिता, कोटिरुद्रसंहिता, उमासंहिता, कैलाससंहिता, और वायवीयसंहिता हैं	७–०
ब्रह्मपुराण–संपूर्ण मूल संस्कृत	५–०
ब्रह्मांडपुराण–सम्पूर्ण	५–०
भविष्यपुराण–इसमें पुराणसंबंधी कथाके सिवाय भूत भविष्य वर्त्तमान तीनोंकाल वर्णित हैं ...	८–०
लिंगपुराण–सटीक	५–०
वामनपुराण–मूल संस्कृत	३–०
कूर्मपुराण–मूल संस्कृत	२–८

नाम.	की. रु. आ.
अग्निपुराण–इसमें शास्त्रकलाओंका संक्षेप वर्णन सर्वदेवताओंकी प्रतिष्ठा लक्षकोटि आदि होम शिल्पशास्त्र, राजधर्म,राजनीति युद्धरचना भारतसार, रामायणसार, ईश्वरावतार,सर्वतिथिवारनक्षत्रादि व्रत षट्प्रयोग,गन्धर्ववेद,भरतशास्त्र, काव्य नाटक भेद, स्त्रीशिक्षा रत्नादिपरीक्षा, वेदशास्त्रादि बहुतसे विषयोंका अपूर्व वर्णन है.	४–०
ब्रह्मवैवर्त्तपुराण–संपूर्ण चारोंखण्ड–जिसमें ब्रह्मखण्ड कृष्णजन्मखण्ड, कृतिखण्ड, और गणेशखण्ड, हैं	७–०
मत्स्यपुराण–जगत्की रचनाके हेतु और मत्स्यावतार धारण करनेका कारण प्रलय होनेका कालपूर्वक वर्णन	५–०
मार्कंडेयपुराण–सप्तशती शान्तनवीटीकासह ...	४–०
वाराहपुराण–धर्म अर्थ काम मोक्षादि सिद्धहोनेके लिये इतिहास संयुक्त कथाओंके वर्णन हैं ...	४–०
वायुपुराण–इसमें अनेक विषय संयुक्त देवादि सृष्टिवर्णन मन्वन्तरादि चतुर्युगाख्यानपृथुवंशकीर्तन श्राद्धक्रिया वर्णन और गयामाहात्म्यादि बहुतसे विषय हैं	५–०
गरुडपुराण–बडा १९००० संपूर्ण यही महापुराण परममान्य ग्रन्थ है	५–०
स्कान्दमहापुराण–इसमें माहेश्वर, वैष्णव, ब्राह्म, काशी, अवन्तिका, नागर और प्रभास ये सात खण्ड हैं ग्रन्थ संख्या एक लाखसे ज्यादा है नूतन छपाहै	३०–०